Fj – क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या उसके भाई याकूब,
यूसुफ, शमौन और यहूदा नहीं हैं? मत्ती १३:५४-५८ और मरकुस ६:१-
६ए | 1

– Save This Page as a PDF–

क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या उसके भाई याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा नहीं हैं?

मत्ती १३:५४-५८ और मरकुस ६:१-६ए

खोदाई: महीनों पहले नाज़रीन ने ईसा मसीह के साथ कैसा व्यवहार किया था? वे क्या सोचते हैं कि वे उसके बारे में “जानते” हैं? यह उनके मंत्रालय को कैसे बाधित करता है? उनके शुरुआती स्वागत और इस स्वागत के बीच क्या बदलाव आया? यदि उन्होंने सही प्रश्न पूछे तो उन्हें सही उत्तर क्यों नहीं मिले? हम कैसे जानते हैं कि याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा प्रभु में मसीह के चचेरे भाई या भाई नहीं थे?

चिंतन: यह मानने से हमें क्या शिक्षा मिलती है कि हम येशुआ के बारे में सब कुछ “जानते” हैं? यीशु की हमारे जीवन में कार्य करने की क्षमता के साथ हमारे विश्वास का क्या संबंध है? वह विश्वास की ओर क्यों देखता है?

यीशु ने कफरनहूम में पतरस का घर छोड़ दिया और अपने शिष्यों के साथ अपने गृहनगर नासरत चले गए (मरकुस ६:१)। ऐसा लगभग प्रतीत होता है मानो कफरनहूम से प्रभु का प्रस्थान उस छोटे यहूदी शहर के इतिहास में एक संकट था। तब से यह मसीहा के सांसारिक मंत्रालय का मुख्यालय नहीं रहा, और जब वह वहां से गुजरता था तो कभी-कभार ही इसका दौरा किया जाता था। वास्तव में, फरीसी विरोध की एकाग्रता और बढ़ती शक्ति, और तिबरियास में हेरोदेस के निवास की निकटता ने उनके मंत्रालय के इस चरण में वहां स्थायी रहना असंभव बना दिया होगा। परन्तु इस समय से मनुष्य के पुत्र को अपना सिर धरने की भी जगह न मिलेगी (मत्ती ८:२०; लूका ९:५८)।

येशुआ मसीहा जीवन बदलने वाली दो दिन की अवधि के बीच में था। ठीक एक दिन पहले जब उन पर राक्षस होने का आरोप लगाया गया था और महान महासभा ने उन्हें अस्वीकार कर दिया था, उन्होंने उस विशेष यहूदी पीढ़ी पर फैसला सुनाया और लोगों से दृष्टांतों में बात करना शुरू कर दिया। इस दिन की शुरुआत रात में उनके द्वारा तूफ़ान को शांत करने और दो दुष्टात्माग्रस्त व्यक्तियों को ठीक करने से हुई थी। फिर सूर्योदय के बाद उसने याईर की बेटी को जीवित किया, और एक बीमार स्त्री को चंगा किया। बाद में उसने दो अंधों और एक गूंगे बहरे को ठीक किया। घर जाने का समय हो गया था.

महीनों पहले जब उन्होंने अपने गृहनगर आराधनालय में लंबे समय से प्रतीक्षित मसीहा के रूप में अपनी असली पहचान प्रकट की तो उन्होंने उन्हें मारने की कोशिश की (देखें Ch– प्रभु की आत्मा एक मैं हूँ)। लेकिन उनकी अनुपस्थिति के अंतराल में

Fj – क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या उसके भाई याकूब,
यूसुफ, शमौन और यहूदा नहीं हैं? मत्ती १३:५४-५८ और मरकुस ६:१-
६ए | 2

उनके प्रति नाज़रीन की भावना और दृष्टिकोण में कुछ परिवर्तन आना चाहिए था। आख़िरकार, वह मृतक जोसेफ की जगह लेकर शहर का बढ़ई था। इसलिए नौ या दस महीने के बाद वह बिल्कुल अलग परिस्थितियों में उनके पास वापस आया था। वे उनकी उपस्थिति की ईश्वरीयता, उनके शब्दों की बुद्धिमत्ता या उनके चमत्कारों की शक्ति को नकार नहीं सकते थे। फिर भी, वे परिवर्तन को स्वीकार नहीं कर सके।

जब सब्त का दिन आया, तो वह आराधनालय में शिक्षा देने लगा (मरकुस ६:२ए)। वहां के लोग मूलतः वही थे जो कई वर्षों से वहां थे – लेकिन यीशु वही नहीं थे। आराधनालय का मुख्य उद्देश्य लोगों को शिक्षा देना था। सेवा के शिक्षण भाग में मुख्य रूप से टोरा से एक खंड को पढ़ना शामिल था, फिर भविष्यवक्ताओं को, जिसे तब पढ़ाया जाता था। ऐसा लगता है कि जब आराधनालय के शासक ने उसे टोरा से शिक्षा देने के लिए आमंत्रित किया, तो वह इस अवसर का विरोध नहीं कर सका।

और बहुत से जिन्होंने उसे सुना वे चकित हो गए (मरकुस ६:२सी)। क्रिया एकप्लेसो है, जिसका अर्थ है मारना, बाहर निकालना, आत्मरक्षा के लिए किसी पर वार करना। हमारे प्रभु की शिक्षाओं और चमत्कारों ने उन पर इतना ज़ोर डाला कि वे खुद पर नियंत्रण खोने की हद तक पहुँच गए। क्रिया अपूर्ण है, जिससे पता चलता है कि आश्चर्य के साथ अपने आप में रहने की यह स्थिति कुछ समय तक जारी रही। संक्षेप में, वे पूरी तरह से स्तब्ध थे।

“इस आदमी को यह ज्ञान और ये चमत्कारी शक्तियाँ कहाँ से मिलीं?” उन्होंने पूछा। “उसे यह कैसी बुद्धि दी गई है, कि वह आश्चर्यकर्म भी करता है” (मत्तीयाहु १३:५४ और ५६बी; मरकुस ६:२सी)! यह उनका श्रेय है कि वे सही प्रश्न पूछ रहे थे। त्रासदी यह थी कि उन्होंने ग़लत रवैये के साथ सही सवाल पूछे। उनका रवैया यह था, “वह अपने आप को आख़िर कौन समझता है?” परिचितता ने अवमानना को जन्म दिया जिसने अविश्वास को जन्म दिया। नासरत समग्र रूप से राष्ट्र का एक सूक्ष्म जगत था। यीशु को पहले नासरत में अस्वीकार कर दिया गया था, लेकिन यह उनकी अंतिम अस्वीकृति थी।

उन्होंने मज़ाक उड़ाते हुए पूछा: क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं है? भाषा का तात्पर्य है कि उत्तर सरल “हाँ” होना चाहिए। हालाँकि, वास्तविक उत्तर इतना सरल नहीं है। लूका की भाषा बहुत सावधानी से तैयार की गई थी: वह बेटा था, जैसा कि सोचा गया था, हेली का बेटा, मैथैट का बेटा जोसेफ का। . . (लूका ३:२३बी)। जोसेफ बढ़ई ने येशुआ को पाला और उसे अपने बेटे के रूप में स्वीकार किया, भले ही उसका कोई प्राकृतिक मानव पिता नहीं था, क्योंकि परमेश्वर पवित्र आत्मा ने मरियम कुंवारी को अलौकिक रूप से गर्भवती किया था। लेकिन नाज़रीन के लिए, येशुआ बहुत साधारण था। वह सिर्फ बढ़ई का बेटा था।

क्या उसकी माता का नाम मरियम नहीं है? मरियम असाधारण धार्मिकता वाली महिला थी, लेकिन वह अब तक जन्मी किसी भी अन्य महिला से अधिक दिव्य नहीं थी, और कैथोलिक

Fj – क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या उसके भाई याकूब,
यूसुफ, शमौन और यहूदा नहीं हैं? मत्ती १३:५४-५८ और मरकुस ६:१-
६ए | 3

हठधर्मिता के अनुसार निश्चित रूप से ईसा मसीह से श्रेष्ठ नहीं है (देखें Ey– यीशु की माँ और भाई)। यहां तक कि उसने प्रभु को मेरे उद्धारकर्ता ईश्वर के रूप में संदर्भित किया (देखें An– मरियम का गीत), अपनी खुद की पापपूर्णता और मोक्ष की आवश्यकता की पुष्टि करते हुए।

और उसके भाई, याकूब (देखें गलातियों १:१९), यूसुफ, शमौन और यहूदा (मत्ती १३:५५; मरकुस ६:३ए एनएएसबी)? यीशु के भाई थे, जिसका अर्थ है कि उनके जन्म के बाद, मरीयम के कम से कम छह और बच्चे थे। यहाँ सूचीबद्ध चार भाई और कम से कम दो बहनें हैं। रोमन कैथोलिक चर्च इन्हें चचेरे भाई-बहन के रूप में समझाने का प्रयास करता है, और इसलिए जोसेफ और मरियम की संतान बिल्कुल नहीं है। लेकिन ग्रीक में एक और शब्द है जिसका अर्थ है चचेरा भाई, एनेप्सियोस, जैसा कि कुलुस्सियों ४:१० में है: मार्क, बरनबास का चचेरा भाई। तात्कालिक सन्दर्भ में उनकी माता और पिता के उल्लेख से पता चलता है कि यह सगा परिवार है, दूर के चचेरे भाई-बहन नहीं।

न ही वे “प्रभु में भाई” हैं। यहां भाई के लिए ग्रीक शब्द एडेलफोस है। इसका उपयोग शारीरिक भाई या प्रभु में भाई के लिए किया जा सकता है, संदर्भ यह निर्धारित करता है कि किसका उपयोग किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए प्रथम कुरिन्थियों १५:६ से हमें पता चलता है कि येशुआ पाँच सौ से अधिक भाइयों (एडेलफोस) को दिखाई दिया था। वह प्रसंग स्पष्टतः प्रभु में भाई-भाई का होगा। कुछ लोग तर्क देते हैं कि ये आध्यात्मिक भाई या चचेरे भाई-बहन हैं, लेकिन उन्हें इसे संदर्भ से बाहर रखना होगा। यदि आप चीजों को संदर्भ से बाहर निकालना चाहते हैं तो आप जो कुछ भी साबित करना चाहते हैं उसे साबित करने के लिए बाइबल का उपयोग कर सकते हैं। हालाँकि, यहाँ संदर्भ माँ, पिता, भाई और बहन का है। दूसरे शब्दों में, निकटतम परिवार। यहां संदर्भ में चाची, चाचा या चचेरे भाई-बहनों का कोई उल्लेख नहीं है।

क्या उसकी सभी बहनें यहाँ हमारे साथ नहीं
हैं (मत्तीयाहु १३:५६ए; मरकुस ६:३बी)? इस पाठ और कई अन्य (मत्ती १२:४६-४७; लूका २:७; युहन्ना ७:१०; प्रेरितों १:१४) से, यह स्पष्ट है कि मरीयम शाश्वत कौमार्य में नहीं रहती थी, जैसा कि रोमन कैथोलिक विधर्म का दावा है। जब परमेश्वर पवित्र आत्मा ने उसे गर्भवती किया तब वह कुंवारी थी। लेकिन बाद में, मरीयम ने अपने पति जोसेफ के साथ सामान्य यौन संबंध बनाए और उनका एक परिवार बन गया। चाहे प्रेरित

Fj – क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या उसके भाई याकूब,
यूसुफ, शमौन और यहूदा नहीं हैं? मत्ती १३:५४-५८ और मरकुस ६:१-
६ए | 4

सुसमाचार लेखकों ने भाई के लिए पुल्लिंग एडेलफ़ॉस का उपयोग किया हो, या बहन के लिए स्त्रीलिंग एडेल्फ़ का, उन दोनों का मूल एक ही है, और उनका अर्थ एक ही गर्भ से है।

और उन्होंने उस पर अपराध किया (मत्ती १३:५७ए; मरकुस ६:३सी)। जबकि यहूदिया और गलील और यहां तक कि उससे भी आगे के क्षेत्रों में बड़ी संख्या में लोगों ने येशुआ के चमत्कारों के कारण उनके शब्दों को एक भविष्यवक्ता के रूप में स्वीकार कर लिया था, ऐसा लगता है कि नासरत गांव पूरी तरह से अनुत्तरदायी था। एक नाज़रीन को उन सभी चीजों को जानने की ज़रूरत नहीं थी। नासरत इतना छोटा शहर था कि अन्य गैलिलियों की तरह नाज़रीन को भी अपने बीच से एक महान भविष्यवक्ता के आने की उम्मीद नहीं थी (यूहन्ना १:४६)। वहां से किसी को भी सबसे निचले स्तर का माना जाता था। वे उसे समझा नहीं सके इसलिए उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया। सबसे दुखद बात यह थी कि उनके अपने भाई-बहन, मरीयम और जोसेफ के बेटे और बेटियां, उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद तक उनके मसीहाई दावों पर विश्वास नहीं करते थे। वे येशुआ के साथ कई वर्षों तक एक ही घर में रहे थे, लेकिन इसका उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

फरीसियों और टोरा-शिक्षकों की तरह, नासरत के लोगों ने उसकी शक्ति और उसकी दिव्यता के बीच तार्किक और स्पष्ट संबंध बनाने से इनकार कर दिया क्योंकि उन्होंने जानबूझकर विश्वास करने से इनकार कर दिया था। सुसमाचार का बीज पाप-प्रेमी दिलों की कठोर मिट्टी पर गिरा, जिसमें ईश्वर की सच्चाई प्रवेश नहीं कर सकी (देखें Et– मिट्टी का दृष्टांत)। जैसा कि येशुआ ने निकोडेमस को समझाया था: जो कोई भी [परमेश्वर के पुत्र] में विश्वास करता है, उसकी निंदा नहीं की जाती है, लेकिन जो कोई भी विश्वास नहीं करता है, वह पहले ही दोषी ठहराया जा चुका है क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के एकमात्र पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया है। यह निर्णय है: प्रकाश जगत में आया है, परन्तु लोगों ने प्रकाश के स्थान पर अन्धकार को प्रिय जाना, क्योंकि उनके काम बुरे थे। जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और इस डर से ज्योति में नहीं आता कि उसके काम उजागर हो जाएंगे (योचनन ३:१८-२०)।

जिन लोगों ने मसीहा को सुना और देखा, उन्होंने सबूतों की कमी के कारण उसे अस्वीकार नहीं किया – बल्कि भारी सबूतों के बावजूद भी। उन्होंने उसे अस्वीकार नहीं किया क्योंकि उनके पास सत्य का अभाव था – बल्कि इसलिए क्योंकि उन्होंने सत्य को अस्वीकार कर दिया था। उन्होंने क्षमा करने से इंकार कर दिया क्योंकि वे उससे अधिक अपने पापों से प्रेम करते थे। उन्होंने प्रकाश को अस्वीकार कर दिया क्योंकि वे अंधकार को पसंद करते थे। परमेश्वर को अस्वीकार करने का कारण सदैव यही रहा है कि लोग उनके मार्ग की अपेक्षा अपने मार्ग को प्राथमिकता देते हैं।

लेकिन यीशु ने उनसे कहा: केवल अपने गृहनगर में, अपने रिश्तेदारों के बीच और अपने ही घर में एक भविष्यवक्ता का सम्मान नहीं किया जाता है (मत्ती १३:५७बी; मार्क

Fj – क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या उसके भाई याकूब,
यूसुफ, शमौन और यहूदा नहीं हैं? मत्ती १३:५४-५८ और मरकुस ६:१-
६ए | 5

६:४)। ये सच साबित हुआ. यहां यह महत्वपूर्ण है कि यीशु ने भविष्यवक्ता होने का निश्चित दावा किया था। उसने पहले से ही यहूदी मसीहा होने का दावा किया था (यूहन्ना ४:२६; लूका ४:२१), परमेश्वर की शक्ति से मनुष्य का पुत्र (मत्ती ९:६; मरकुस १:१०; लूका ५:२४), और पुत्र परमेश्वर का (यूहन्ना ५:२२)।

परन्तु उन्होंने वहां उनके विश्वास की कमी के कारण अधिक चमत्कार नहीं किये, सिवाय कुछ बीमार लोगों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा करने के। उस समय यीशु केवल विश्वास के आधार पर व्यक्तिगत चमत्कार कर रहे थे। परन्तु नासरत के लोग इतने अविश्वासी थे कि वे अपने बीमारों को चंगा करने के लिए भी उसके पास नहीं लाते थे। और वह उनके विश्वास की कमी पर चकित था (मत्तीयाहु १३:५८; मरकुस ६:५-६ए)। यह तथ्य कि हमारे सर्वज्ञ परमेश्वर नासरत के लोगों के अविश्वास पर आश्चर्यचकित थे, हमें उनकी मानवीय सीमाओं की कुछ समझ मिलती है। परमेश्वर के रूप में, वह किसी भी चीज़ पर आश्चर्यचकित नहीं होंगे। फिर भी, अपनी मानवता में, उसे नाज़ारेथ में मिले स्वागत से भिन्न स्वागत की आशा थी।

यीशु दुखी और निराश हुए होंगे जब वह घाटी से एस्ड्रेलोन के मैदान की ओर गए और आखिरी बार अपने पैतृक शहर की ओर देखा। मानवीय रूप से, जब उन्हें गलील में अपने मंत्रालय और दाउद के शहर में अपने भाग्य का सामना करना पड़ा तो उन्हें उनकी दोस्ती और नैतिक समर्थन की आवश्यकता थी। लेकिन, वास्तव में, उन्हें उसकी ज़रूरत से ज़्यादा उसकी ज़रूरत थी। दुख की बात है कि उन्होंने उसे पाने का अपना आखिरी अवसर खो दिया था।

विश्वास ईश्वर के प्रति आज्ञाकारिता का आह्वान करती है। जैसे ही हम प्रेम से उसकी आज्ञा मानते हैं, परमेश्वर हमारे जीवन में कार्य कर सकते हैं। यीशु ने अपने प्रेरितों से कहा: यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं का पालन करो (योकनान १४:१५)। जब हम विश्वास करते हैं या विश्वास रखते हैं, तो हम खुद को यहोवा के अधीन रखते हैं और उसके प्रति समर्पित होते हैं।

परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारी होने के लिए, हमें उस पर भरोसा और आशा करनी होगी। इब्रानियों ११ में, लेखक ने तानाख में पवित्र पुरुषों और महिलाओं के उदाहरण दिए, जो अपने विश्वास के कारण, प्रभु का अनुसरण करने में लगे रहे, इस विश्वास के साथ कि उनका वचन विश्वसनीय था। वे परमेश्वर पर अपनी आशा रख सकते थे, यह जानते हुए कि वह अपने सभी वादों के प्रति सच्चा होगा।

आज्ञाकारिता, विश्वास और आशा विश्वास के आवश्यक भाग हैं। जब यीशु के शब्दों और कार्यों का सामना किया गया, तो नासरत के लोगों ने विश्वास नहीं किया। चूँकि वे मसीह के प्रति समर्पण नहीं करेंगे और उसकी आज्ञा का पालन नहीं करेंगे, और चूँकि उन्हें उस पर कोई भरोसा नहीं था, इसलिए वह उनके बीच काम नहीं कर सका। आइए हम प्रार्थना करें कि हम यीशु पर विश्वास करेंगे और अपने जीवन में उनकी उपस्थिति और

Fj – क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या उसके भाई याकूब,
यूसुफ, शमौन और यहूदा नहीं हैं? मत्ती १३:५४-५८ और मरकुस ६:१-
६ए | 6

कार्य का अनुभव करेंगे।

पवित्र आत्मा, येशुआ में मेरा विश्वास बढ़ाओ। मुझे पिता पर भरोसा और आशा रखने और उनके पुत्र के शब्दों का पालन करने में सक्षम बनाएं। आत्मा, मैं अपने जीवन में यहोवा की शक्ति को जानना चाहता हूं। मैं विश्वास करता हूं, मैं विश्वास करना चाहता हूं – कृपया मेरे अविश्वास में मदद करें।